कस्तूरबा गांधी पर वेबिनार आयोजित

'सोसाइटी फॉर इम्पावरमेंट' द्वारा 'समाज निर्माण में कस्तूरबा गांधी की भूमिका' विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया। विषय प्रवेश कराते हुए राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के पूर्व सदस्य एवं कस्तूरबा गांधी विश्वविद्यालय के संस्थापक मानद कुलाधिपति प्रो. सच्चिन्द्र नारायण ने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम से लेकर समाज निर्माण में कस्तूरबा की भूमिका को नए सिरे से रेखांकित किए जाने की आवश्यकता है ताकि आज की पीढ़ी उनके योगदान का अध्ययन करे। उन्होंने कहा कि दक्षिण अफ्रीका से लेकर आगा खां पैलेस तक उन्होंने गांधी का साथ दिया। समाज के अंतिम जनों को मुख्यधारा में लाने की सारी रूपरेखा कस्तूरबा द्वारा ही तैयार की गई थी। यदि 'बा' नहीं रहती तो गांधी 'मोहनदास' ही बनकर रह जाते। गुजरात विद्यापीठ की प्रोफेसर भद्रा बहन ने कहा कि गांधीको अहिंसा का पहला पाठ पिताजी से मिला लेकिन सविनय अहिंसा का पाठ उन्हें कस्तूरबा ने ही सिखाया। कस्तूरबा दक्षिण अफ्रीका से लेकर साबरमती, चम्पारण, कोचरब और सेवाग्राम आश्रमों में रही लेकिन उनके दिलों में संपूर्ण मानव जीवन के कल्याण की चिन्ता थी। उनके लिए कोई नहीं पराया, सारा घर संसार था। पूर्व आई.ए.एस. डॉ. ए.के.पाण्डेय ने कहा कि कस्तूरबा गांधी के समाज निर्माण के पदचिह्न ताना भगत, रामगढ़ कांग्रेस और झारखंड आदिवासियों के बीच आज भी मौजूद हैं। कस्तूरबा पर अपेक्षाकृत कम काम हुए हैं। प्रसिद्ध गांधीवादी और इतिहासकार भैरव लाल दास ने कहा कि नवम्बर, 1917 में चम्पारण के भितिहरवा आश्रम से कस्तूरबा का समाज निर्माण का कार्य आरंभ हुआ था। उनके नेतृत्व में शिक्षा, स्वास्थ्य, साफ-सफाई, सामूहिकता, राष्ट्रीयता, एकजुटता और निर्भयता का सफल आंदोलन चम्पारण में चलाया गया। कस्तूरबा के अहिंसक कार्यों से निलहे ही नहीं तत्कालीन ब्रिटिश सरकार भी चिन्तित हो गई थी। कस्तूरबा गांधी नेशनल मेमोरियल ट्रस्ट, गुवाहाटी की गीतांजली गोस्वामी ने कहा कि गांधी की शिक्षिका के रूप में कस्तूरबा गांधी का स्थान था और भले ही गांधीजी ब्रिटिश सरकार, आंदोलन, जेल और यहां तक कि मृत्यु से नहीं डरते थे लेकिन कस्तूरबा से भय खाते थे। अहिंसा, समाज निर्माण और स्वच्छता की प्रेरणा उन्हें कस्तूरबा से ही मिली थी। वेबिनार को कुसुम बोरा मोसाकी ने भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम का सफल संचालन सी.ए. आशीष नीरज ने किया।